विचार बिन्दु

त्याग यह नहीं कि मोटे और खुरदरे वस्त्र पहन लिए जायें और सूखी रोटी खायी जाये, त्याग तो यह है कि अपनी इच्छा अभिलाषा और तृष्णा को जीता जाये। –सुफियान सौरी

आस्था केन्द्र गंगा-जमुना जल स्तर को बनाए रखने में बढ़ता तापमान बड़ी चुनौती

यदि इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ रिमोट सेंसिंग के वरिष्ठ वैज्ञानिकों की माने तो बढ़ते तापमान का असर आने वाले दिनों में तेजी से देखा जाएगा। संभावना तो यहां तक व्यक्त की जा रही है कि यही हालात रहे तो जीवन-दायिनी गंगा-जमुना नदी में जल स्तर कम होगा और हालात यहां तक हो सकते हैं कि गंगा-जमुमा के बहाव क्षेत्र में तेजी से पानी का स्तर कम होगा। यहां तक कि इस क्षेत्र में पानी का संकट तक आ सकता है। यह चेतावनी आज की नहीं हैं अपितु भूविज्ञानियों व पर्यावरण विज्ञों द्वारा लंबे समय से दी जाती रही है। प्रकृति लगातार डेढ़-दो दशक से चेताती जा रही है पर अनदेखा किया जा रहा है। जिस तरह से आज हिमालय क्षेत्र भूगर्भीय हलचलों का केन्द बनता जा रहा है उससे प्रभावित हो रहा है पहले ऐसा नहीं हुआ है। गत दशकों में हिमालय पर्वत माला श्रृंखला में सर्वाधिक भगर्भीय हलचल देखने को मिल रही है। साल में एक दो नहीं अपितु आये दिन धरती हिलने लगी है। भूस्खलन होने लगे हैं। साल में एक दो बार तो बड़े भूस्खलन आम होते जा रहे हैं। देवभूमि आज भूगर्भीय हलचल का केन्द्र बन गई है। हिमालय श्रृंखला के ग्लेसियर तेजी से पिघल रहे हैं। यहां तक कि हिमालयी श्रृंखला से निकलने वाली नदियों के उद्गम स्थल लगातार पीछे किसकते जा रहे हैं। पिछले सालों में विनाश के भयावह हालातों से हम रुबरु हो चुके हैं।

दरअसल गंगा-जमुना के उद्गम स्थल या यों कहें कि संपूर्ण उत्तरांचल क्षेत्र जिसमें चार धाम आते हैं, सनातन काल से आस्था का केन्द्र रहे हैं। इनकी अपनी अहमियत रही है तो प्राकृतिक संतुलन बनाए रखने में भी हिमालय क्षेत्र की अपनी भूमिका रही है। समय का बदलाव देखिये कि यहां तक तो सब ठीक है कि इस क्षेत्र का तेजी से विकास हुआ है। आज चारधाम की यात्रा सहज और आम आदमी की पहुंच में आई है। मुझे और मेरी जैसी पुरानी पीढ़ी के लोगों को अच्छी तरह से याद है कि चार धाम की यात्रा पर जाने से पहले और यात्रा से सकुशल वापसी पर वृहद आयोजन होते थे। हमनें तो यहां तक देखा है कि गंगाजी की यात्रा करने पर चाहे वह हरिद्वार की हो या ऋषिकेश की गंगाजल के पूजन का भव्य आयोजन होता था जिसे गंगोज के नाम से जाना जाता था। घर-परिवार और नाते-रिश्तेदार जुटते थे, पूजन-हवन होता था और फिर सहभोज तो होना ही था। आज परिस्थितियों में बदलाव आया है। गंगा-जमुना का यह पवित्र क्षेत्र आज आस्था से अधिक पर्यटन का केन्द्र बन गया है। लोग घूमने के बहाने जाते हैं। यहां तक तो ठीक कहा जा सकता है पर जिस तरह से प्रतिबंधित वस्तुओं खासतौर से प्लास्टिक और इसी तरह की सामग्री का कचरा केन्द्र बनाने से पर्यावरणीय प्रदूषण की समस्या आम हो गई है। लोग चंद घंटों के लिए जाते हैं और प्लास्टिक कचरा और अन्य सामठी वहां छोड आते हैं। इसी तरह से विकास के नाम पर जिस तरह से कंक्रिट का जंगल विकसित किया जा रहा है उसे भी पर्यावरण की दृष्टि से उचित नहीं माना जा सकता है। हजारों की संख्या में प्रतिदिन वाहनों की रेलमपेल से प्रदूषण फैल रहा है वो अलग। इससे क्षेत्र के वातावरण में बदलाव आ रहा है। तापमान बढने लगा है। प्रकृति में विकृति की जा रही है। आखिर इसकी भी कोई सीमा होनी ही चाहिए। हिमालय क्षेत्र में तापमान वृद्धि के कारण बर्फ पिघलने की रफ्तार तेज हो गई है। पिछले चार साल के सेटेलाइट डेटा विश्लेषण ही चौकाने व चेताने के लिए काफी हैं। ऐसे में समय रहते उपाय खोजने ही होंगे। नहीं तो जीवनदायिनी गंगा-जमुना में पानी तो कम होगा ही साथ ही क्षेत्र का सारा संतुलन ही बिगड के रह जाएगा।

समुद्र के किनारें के शहरों की डूबने की भविष्य वाणियां आम होती जा रही है। चक्रवाती तूफान और जंगलों में आग आम होती जा रही है। सुनामी जैसी घटनाएं बढ़ी है तो एक तूफान जाता नहीं है कि दूसरे की चेतावनी आ जाती है। हजारों लोग कालकवलित हो जाते हैं तो अरबों खरबों की संपत्ति इन तूफानों की भेंट चढ़ जाती है।

हांलाकि जहां यह स्थानीय कारक हैं वहीं देश दुनिया में प्रकृति के अत्यधिक दोहन और कार्बन उत्सर्जन का परिणाम भी कहीं ना कहीं यहां भी परिलक्षीत हो रहा है। दुनिया के अन्य ग्लेसियरों की तरह यहां भी ग्लेसियर तेजी से पिघल रहे हैं। परिणाम साफ दिखाई देने लगे हैं। समुद्र के किनारें के शहरों की डूबने की भविष्य वाणियां आम होती जा रही है। चक्रवाती तूफान और जंगलों में आग आम होती जा रही है। सुनामी जैसी घटनाएं बढ़ी है तो एक तूफान जाता नहीं है कि दूसरे की चेतावनी आ जाती है। हजारों लोग कालकवलित हो जाते हैं तो अरबों खरबों की संपत्ति इन तूफानों की भेंट चढ़ जाती है।

हांलाकि दुनिया के देश पर्यावरण संकट को लेकर के गंभीर होने लगे हैं। प्रयास भी हो रहे हैं पर परिणाम अभी दिखाई नहीं दे रहे हैं। एक बात साफ हो जानी चाहिए कि प्रकृति से संयोग रहेगा तो विकास होगा और प्रकृति से खिलवाड होगा तो हमें परिणाम में विनाश ही मिलना है। ऐसे में गंगा-जमुना में जल स्तर कम होने की चेतावनी दरअसल समय रहते चेतने की चेतावनी के रुप में देखी जानी चाहिए नहीं तो आने वाली पीढ़ी हमें कभी माफ नहीं करने वाली है। नमामी गंगे के सकारात्मक परिणाम अभी दूर ही दिखाई दे रहे हैं। वहीं सरकारों को ऐसा सिस्टम विकसित करना होगा जिससे प्रतिबंधित व दुष्प्रभाव छोड़ने वाली वस्तुओं का प्रवेश ही निषिद्ध हो जाए। निर्माण व विकास कार्यों में भी पर्यावरण सहयोगी वस्तुओं का ही उपयोग हो ताकि क्षेत्रीय संतुलन बनाए रखे जा सके। पर्यावरण प्रेमियों को भी इसके लिए आगे आना होगा।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ.राजेन्द्र प्रसाद शर्मा
(वरिष्ठ लेखक)

राशिफल शुक्रवार 9 दिसम्बर, 2022

पंडित अनिल शर्मा

पौष मास, कृष्ण पक्ष, प्रतिपदा तिथि, शुक्रवार, विक्रम संवत 2079, मूल नक्षत्र रात्रि 1:13 तक, गंड योग दिन 1:41 तक, नाग करण दिन 3:47 तक, चन्द्रमा धनु राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थितिः सूर्य-वृश्चिक, चन्द्रमा-धनु, मंगल-वृष, बुध-धनु, गुरू-मीन, शुक्र-धनु, शनि-मकर, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

आज राजयोग दिन 11:35 से दिन 2:59 तक है। आज रसिक माधुरी जयन्ती और डा.राजगोपालाचार्य जयन्ती है।

सर्वश्रेष्ठ चौघड़ियाः चर सूर्योदय से 8:26 तक, लाभ-अमृत 8:26 से 11:01 तक, शुभ 12:19 से 1:36 तक, चर 4:12 से सूर्यास्त तक।

राहूकालः 10:30 से 12:00 तक। सूर्योदय 7:08, सूर्यास्त 5:30

मेष

परिवार में शुभ संदेश प्राप्त होंगे। शुभ कार्यों के लिए बाहर जाना पड़ सकता है। धार्मिक स्थान की यात्रा का कार्यक्रम बन सकता है। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

सिंह

परिजनों के व्यवहार के कारण मन खिन्न हो सकता है। आवश्यक कार्यों के संबंध में दुविधा बनी रहेगी। आपसी ईर्ष्या-वैमनस्यता के कारण परेशानी का सामना करना पड़ सकता है।

धनु

घर-परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। अतिथियों के आगमन से दिनचर्या अस्त-व्यस्त हो सकती है। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी।

वृष

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। मित्रों/रिश्तेदारों से मतभेद बढ़ सकते हैं। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं।

कन्या

घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। अतिथियों के आगमन से उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मकर

आज अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। व्यावसायिक कार्यों के लिए बाहर जाना पड़ सकता है। नौकरीपेशा व्यक्तियों को भागदौड़ रहेगी।

मिथुन

परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक अनुबंध प्राप्त होंगे।

तुला

व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे।

कुंभ

आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है।

कर्क

व्यक्तिगत परेशानियों से राहत मिलेगी। विवादित मामलों का निपटारा हो सकता है। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी।

वृश्चिक

आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

मीन

व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे।

चमड़ी उधेड़ रोग और लोग
(मनचाउसेन सिन्ड्रोम बाई प्रॉक्सी)

सुनते थे हन्टर से या बैंत से मार मार कर चमडी उधेड दी - मालिक ने गुलाम की, दरोगा ने चोर की या मास्टर ने छात्र की। शरीर पर लाल उभरे निशान, लहूलुहान उखडी हुई चमडी। इसी के समकक्ष है टॉक्सिक एपिडर्मल नेक्रोलाइसिस,(टी ई एन) एक प्रकार का भयंकर चमडी उधेड रोग। इसमें शरीर के अधिकांश सतह से चमडी की सतही परत (एपिडर्मिस) मर कर (नेक्रोलाइज्ड) उखड कर अलग हो जाती है। ऐसा किसी दवा के सेवन से व्याप्त टोक्सिन से होता है। यह दवा के अधिक मात्रा में दिये जाने से या उसके साइड एफेक्ट के कारण नहीं, वरन्, हजारों या लाखों में से किसी एक में अकारण ही हो जाता है।

हाल ही का केस। भारतवंशी विदेशी एक महिला डाक्टर पति के साथ भारत आईं। कोलकत्ता पहुंची, गले का संक्रमण हुआ। हलका भुखार। डॉक्टर पति ने साधारण संक्रमण और भुखार के लिए एन्टीबायोटिक, दर्द नाशक आदि दवायें दी। दो सप्ताह ठीक ठाक चलता रहा। फिर बुखार तेज, चमडी पर लाल चकते उभर आये। डॉक्टर पति ने शहर के नामी फिजिशियन से संपर्क कर अपना परिचय दिया और घर आकर देखने को कहा। वे आये, महिला को देखा। लगा सामन्य वाइरल बुखार है, लाल चकते भी उसी के कारण है। कोई नई दवा नहीं दी। संक्रमण के निदान के लिए सभी टैस्ट लिख दिए। टैस्ट करवाये या नहीं, उनका क्या रिजल्ट रहा डॉक्टर पति ने दस दिन तक कोई संपर्क नहीं किया, स्वयं ही इलाज करते रहे। संपर्क किया तबियत खराब हो गई है, शरीर पर लाल चकते फिर उभर आये हैं। फिजिशियन ने रोगी को क्लिनिक लाने के लिए कहा। देखा, जांच की। रोगी ने बताया कि पिछली रात चाईनीज फूड खाया था उसी के बाद तबियत खराब हुई। शरीर पर सूजन, लाल चकते, लगा महिला एलर्जिक है और उसे एलर्जिक रिएक्सन हुआ है। निदान किया एन्जियो न्यूरोटिक इडिमा विद वेस्कुलाइटिस ड्यू टू चाईनीज फूड। उन्होंने डॉक्टर पति से बात कर स्लो एक्टिंग स्टेरोइड का इन्जेक्शन लगा दिया, वही इन्जेक्शन दो दिन और लगवाने को कहा और लिख दिया। डाक्टर पति ने उसी रोज दो स्किन स्पेशिलिस्ट को और दिखाया। चार दिन तक फिजिशियन से कोई संपर्क नहीं, क्या इलाज किया, क्या अवस्था रही कुछ नहीं बताया। पति स्वयं ही इलाज कर रहे, अन्य डॉक्टरों से सलाहा कर। फिर फिजिशियन से संपर्क किया बताया हालत और खराब हो गई है। रेशेज बढ गये हैं। फिजिशियन को दूसरे रोज अमेरिका जाना था अत: वे इलाज अपने हाथ में नहीं ले सकते थे। डॉक्टर पति ने अपने एक सहपाठी डॉक्टर से संपर्क कर महिला को उसकी देख रेख में अस्पताल में भर्ती कर दिया। उस डॉक्टर ने फिजिशियन से संपर्क किया और कहा कि वे जाने से पहले मरीज को देख जायें। उन्होंने आकर मरीज को देखा। रेशेज फैलने के साथ साथ अब फफोले बन गये थे। रियेक्शन एलर्जिक ही लग रहे थे अत: उन्होने जल्दी काम करने वाला एक और स्टेरोइड लिख दिया। अस्पताल के डॉक्टर को अपनी सलाह दी और अस्पताल के

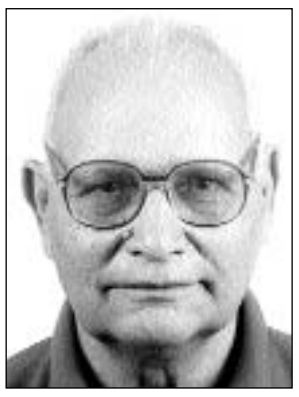

डॉ. श्रीगोपाल काबरा

■ हजारों या लाखों में से किसी एक में दवा के सेवन से व्याप्त टॉक्सिन से यह रोग होता है

फिजिशियन को मरीज की चिकित्सा अपने हाथ में लेने के लिए लिखा। महिला का डॉक्टर पति मौजूद था और सारी चिकित्सा अपनी इच्छा अनुरूप करवा रहा था। शाम को दो चर्म रोग विशेषज्ञो को देखने को बुलाया। उन्होंने अपने हिसाब से इलाज की सलाह लिखी, डॉक्टर पति को बताया।

टी ई एन एक विलक्षण विरला रोग है। कारण ही नहीं पता तो निवारण कैसे हो। कोई मान्य इलाज नहीं है। सभी अपनी अपनी समझ के हिसाब से सिम्पटोमेटिक उपचार करते हैं। रोग धातक। रोगी स्वयं डॉक्टर। पति अमेरिका का पैसे वाला डॉक्टर। अपने हिसाब से अपने अनुसार सब इलाज करवा रहे थे। शहर के सभी नामी चर्मरोग विशषज्ञो को बुलाया, उनसे राय लिखवाई, परामर्श किया। आंखों के विशेषज्ञ, मुंह व गले के विशेषज्ञ, प्लास्टिक सर्जन, स्त्री रोग विशेषज्ञ - रोग एक ही लेकिन उसके अलग अलग स्थानीय लक्षणों के इलाज के लिए अलग विशेषज्ञ। कुल मिला कर दर्जन से ऊपर डॉक्टरों को पति ने बुलाया। सबने अपनी अपनी सलाह अपने-अपने इलाज लिखे। पति ने किस की सलाह मानी किसकी नहीं, कुछ पता नहीं। पेशेन्ट फाइल में कुछ भी लिखा हो महिला को वही दिया गया जो पति ने कहा। बिना उनकी अनुमति के तो पेशेन्ट को कोई देख भी नहीं सकता था कुछ करने की बात तो दूर। पांच दिने में हालात खराब हो गई। पति हवाई एम्बूलेंस से महिला को मुम्बई के नामी अस्पताल ले गये। वहां भी पति ने दादागिरी दिखाई। वरिष्ट नामी चिकित्सक को स्वेच्छा से इलाज नहीं करने दिया। रोग घातक था, रोगी नहीं बची।

डॉक्टर पति ने कोलकत्ता और मुंबई के इलाज करने वाले सभी छब्बीस डॉक्टरों के खिलाफ केस ठोक दिए। 77 करोड का हर्जाना मांगा। ऐसा लगा जैसे वह अपनी पत्नी का इलाज इसी लक्ष्य के लिए करवा रहा था। उसने सारे इलाज को वैसे ही अपने स्वार्थ पूर्ति एवं अहं तुष्टी के लिए मेनुपुलेट किया जैसे मनोग्रंथि ग्रस्त मनचाउसेन सिंड्रोम बाई प्रोक्सी का व्यक्ति करता है। फिर मैडिकल काऊंसिल में शिकायत की, सिविल केस, क्रिमिनल केस, उनके निर्णय के खिलाफ नेशनल कमीशन, हाई कोर्ट, सुप्रीम कोर्ट। प्रेस कान्फ्रेस, फेस बुक, शोसल साइटस पर प्रचार किया। इसके लिए उसने पहले से ही सब तैयारी कर रखी थी। सारा इलाज मेनुपुलेट और मेनेज किया था। स्वयं विशेषज्ञ डॉक्टर था, उसें अंदाज था घातक रोग का अंजाम क्या होगा। वह तो इसका इन्तजार ही कर रहा था, अपने लक्ष्य पूर्ति के लिए। अपने आपको शहीद के रूप में प्रचारित कर अपने अहं की पुष्टी की। सब जगह अपने पर फोकस, केन्द्र में बने रहने की चेष्टा।

जब विशेषज्ञ डॉक्टर, जो रोग की बारीकियों को समझने की क्षमता रखते हैं, उनके ही यह रोग समझ से परे था तो विधि विशेषज्ञों द्वारा इसे समझने की चेष्टा तो अनाधिकार ही कही जायगी। किसी भी तथ्य को ले कर न डॉक्टरों में सहमती थी न विधि विशेषज्ञों में। नतीजा, अलग -अलग धारणा, अनुभव, और निर्णय। 26 डाक्टर 52 विधि विशेषज्ञ और एक पैसे वाला अमेरिकन। कहावत है कानून गधे के समान होता है, जिसे उसका कान पकड कर हांकना आता है, वह उधर ही चल देता है। अमेरिकन डॉक्टर ने इसका भरपूर लाभ उठाया। मनचाउसेन सिंड्रोम बाई प्रोक्सी से ग्रसित व्यक्ति की तरह उसने बड़े नियोजित ढंग से सारा केस मेनुपुलेट किया और अपने लक्ष्य प्राप्ति में अंततः सफल हुआ। चमडी उधेड रोग का इलाज करने वाले डॉक्टरों की चमडी उधेड दी। करोडो का मुवावजा लिया।

–डॉ. श्रीगोपाल काबरा,
वरिष्ठ चिकित्सक, जयपुर

चम्बल नदी किनारे मगरमच्छ ले रहे सन बाथ

धौलपुर, (निसं)। सर्दियों में चंबल नदी में जलीय जीवों की अठखेलियां शुरू हो गई है। धौलपुर से होकर गुजरने वाली चंबल नदी में गुरुवार सुबह घड़ियाल और मगरमच्छ की अठखेलियों के साथ नदी किनारे कछुएं भी धूप सेंकते नजर आए। चंबल नदी में जलीय जीवों की

■ इस बार चम्बल में घड़ियाल और मगरमच्छ के साथ डॉल्फिन भी नजर आने लगी हैं

अठखेलियों को देखने के लिए पर्यटक भी पहुंचना शुरू हो चुके हैं। जिनके लिए नगर परिषद ने 3 वोट शुरू कर दी हैं। जिनके जरिए पर्यटक नदी के 6 किलोमीटर तक दोनों जलीय जीवों की अठखेलियां को निहार सकते हैं।

वन्य जीव प्रेमी मुन्ना लाल निषाद ने बताया कि चंबल नदी एक बार फिर से गुलजार है। सुबह नदी में मगरमच्छ और घड़ियाल एक दूसरे के साथ रेस करते हुए दिखाई दिए, तो वहीं सॉफ्टसेल कछुआ भी नदी किनारे सन बाथ करते हुए नजर आए। उन्होंने बताया कि इस बार नदी में घड़ियाल और मगरमच्छ के साथ डॉल्फिन भी नजर आने लगी है। जो पूर्व में नदी में गंदा पानी होने की वजह से भिंड की ओर चली गई थी।

सर्दी बढ़ने के साथ चंबल किनारे अठखेलियां कर रहे घडियाल और मगरमच्छ।

इस बार स्वच्छ और साफ पानी होने की वजह से डॉल्फिन एक बार फिर से वापस धौलपुर की ओर आ चुकी हैं। चंबल नदी में 100 साल से अधिक पुराने कछुओं के साथ 10 से 12 फीट के घड़ियाल और मगरमच्छ भी देखने को मिल रहे हैं। जिन्हें देखने के लिए दूर-दूर से पर्यटक धौलपुर पहुंच रहे हैं।

करीब पांच हजार आर.सी. और इतने ही लाईसेंस अटके

अलवर, (निसं)। अलवर आरटीओ ऑफिस में कार्ड बनाने का कच्चा माल व संसाधन नहीं होने से वाहनों की आरसी एवं लाईसेंस नहीं बनने से आम आदमी को भारी परेशानी हो रही है। इस संदर्भ में जब आरटीओ और डीटीओ से बात की तो उन्होंने भी हाथ खड़े कर दिए और कहा कि, इस समस्या का निदान उनके पास अभी नहीं है, क्योंकि यह समस्या अलवर ही नहीं पूरे राजस्थान में हो रही है।

अलवर आरटीओ आफिस में विगत कई दिनों से आरसी और लाईसेंस जनता को नहीं मिल पा रहे हैं जिससे आम नागरिकों को भारी समस्या हो रही है। इस संदर्भ में जब आरटीओ रानी जैन और डीटीओ प्रवर्तन ललित कुमार गुप्ता से बात की तो उन्होंने स्वीकारा की यह समस्या अलवर की ही नहीं अपितु पूरे राजस्थान की है। एमटेक कंपनी जिसके पास राजस्थान का लाईसेंस और आरसी प्रिंट का ठेका है उसके पास कार्ड बनाने का कच्चा माल व संसाधन उपलब्ध नहीं है जिसके कारण आरसी और लाईसेंस प्रिंट नहीं हो पा रहे हैं।

उन्होंने बताया कि इस समस्या के निदान के लिए हमने जयपुर उच्च अधिकारियों को बार-बार लिखा है, लेकिन अभी तक इस समस्या का समाधान नहीं हो पाया है। कुल मिला कर दोनों अधिकारियों ने इस समस्या का निदान करने से अपने हाथ खड़े कर दिये क्योंकि जब इस समस्या का उच्च अधिकारी हल नहीं ढूड पाए वे तो उन्हें सिर्फ अपनी शिकायत ही दर्ज करा सकते है फिलहाल अलवर में वाहन आरसी करीब पांच हजार और इतने ही लाईसेंस लंबित चल रहे हैं।

'विवेकानंद के शिकागो से खेतड़ी लौटने पर 40 मण देसी घी के दिए जलवाए थे'

खेतड़ी, (निसं)। शिकागो विश्व धर्म सम्मेलन में सनातन धर्म का परचम लहराने के बाद भारत लौट कर आए स्वामी विवेकानंद का खेतड़ी में 12 दिसंबर 1897 को खेतड़ी नरेश राजा अजीत सिंह ने भव्य स्वागत किया था तथा 40 मण देसी घी के दिए जलाकर पूरे कस्बे को रोशन किया गया था।

उन्हीं यादों को पिछले 12 वर्षों से लगातार खेतड़ी के रामकृष्ण मिशन आश्रम के सचिव स्वामी आत्मानिष्ठानंद महाराज के सानिध्य में विरासत दिवस समिति व कस्बेवासियों के द्वारा विरासत दिवस मनाया जाता है। इसी को लेकर 12 दिसंबर को आयोजित होने वाले विरासत दिवस की

■ 12 दिसंबर 1897 को खेतड़ी नरेश राजा अजीत सिंह ने भव्य स्वागत किया था

तैयारियां कस्बे में जोर-शोर से चल रही है।

गुरुवार को रामकृष्ण मिशन आश्रम के वॉलिंटियर मुख्य बाजार में व्यापारियों को निमंत्रण देते नजर आए। इस दौरान मोहन सैनी, गौरव खींची ने बताया कि युगांतकारी स्वामी विवेकानंद ने जब शिकागो विश्व धर्म सम्मेलन में "मेरे अमेरिकी भाइयों बहनों" कहकर पूरे सदन को तालियां बजाने के लिए मजबूर कर दिया था और पूरे विश्व में भारत की संस्कृति व अध्यात्म को ओर ध्यान आकर्षित किया था।

12 दिसंबर 1897 को स्वामी विवेकानंद शिकागो विश्व धर्म सम्मेलन से खेतड़ी आने, उनका महाराजा अजीत सिंह द्वारा भव्य स्वागत करने की याद को ताजा करने को लेकर खेतड़ी के लोग विरासत दिवस मनाते हैं। हर वर्ष की भांति सुबह स्कूली बच्चे प्रभात फेरी निकालेंगे। दोपहर को राजा अजीत सिंह स्वामी विवेकानंद की सजीव झांकियां निकाली जाएगी तथा पन्ना सागर तालाब पर सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा। इस मौके पर मोहित सैनी, विकास कुमावत, कुलदीप खींची, अभिषेक बबेरवाल मौजूद रहे।

त्रिदेवों के अंश भगवान दत्तात्रेय

पौराणिक कथानुसार ब्रह्माजी के मानस पुत्र सप्त ऋषियों में से एक महर्षि अत्रि व प्रजापति कर्दम ऋषि की पुत्री और सांख्यशास्त्र के प्रवर्तक कपिल देव की भगिनी सती अनुसूया के यहां त्रिदेवों के अंश से तीन पुत्र सबसे पहले ऋषि दुर्वासा, फिर चन्द्रदेव उसके बाद दत्तात्रेय ने जन्म लिया।

चूंकि भगवान दत्तात्रेय को शैवपंथी प्रभु शिव का अवतार तो वैष्णव पंथी प्रभु विष्णु का अंशावतार मानते हैं और सती अनुसूया की पति-भक्ति के कारण उनकी सतियों की गणना में सबसे पहले होती है इसलिये कुछ लोगों का यह स्वाभाविक प्रश्न हो जाता है कि फिर ये इनके पुत्र कैसे हुये। इसलिये इस जिज्ञासा के समाधान हेतु उस घटना से आप सभी को अवगत करा रहा हूं जिसके चलते इनका जन्म सती अनुसूया के गर्भ से हुआ। वह घटना इस प्रकार है -

एक बार ब्रह्माणी, विष्णुवक्षा व गौरी में यह जानने की प्रबल इच्छा जागी कि सर्वश्रेष्ठ पतिव्रता कौन है? जब यह निर्णय हो गया कि अत्रि पत्नी अनुसूया इस समय न केवल सर्वश्रेष्ठ पतिव्रता है बल्कि सतियों की गणना में भी वे पहले स्थान पर हैं तब इन तीनों ने अपने -अपने स्वामियों से भूलोक जा कर पतिव्रता अनुसूया की परीक्षा लेने का आग्रह किया। इस आग्रह के परिणामस्वरूप तीनों देव अर्थात ब्रह्मा, विष्णु व महेश ब्राह्मण वेश धारण कर महर्षि अत्रि के आश्रम उस समय पहुंचे जब महर्षि आश्रम के बाहर कहीं गये हुये थे।

सती अनुसूया ने उनका यथोचित सत्कार किया और पधारने वास्ते आभार भी प्रकट किया। तत्पश्चात तीनों ने भिक्षा की मांग तो की, सो तो ठीक, लेकिन एक शर्त भी लगा दी जिसके अनुसार सती को एकदम नग्न हो कर भिक्षा देनी थी अन्यथा वे भिक्षा नहीं लेंगे। इनकी शर्त जान सती धर्मसंकट में उलझ गयीं लेकिन फिर थोडा संभलकर उन्होंने मन्त्र का जाप कर अभिमन्त्रित जल को उन तीनों ब्राह्मण वेश धारण किये त्रिदेवों पर डाल दिया।

गोवर्धन दास बिन्नानी

अभिमन्त्रित जल के छीटों से तीनों तुरन्त प्रभाव में छोटे-छोटे बालक अर्थात शिशु रूप में बदल, सती अनुसूया के गोद में खेलने लगे। इस तरह तीनों को शिशु रूप में पा सती ने तीनों को स्तनपान करा भिक्षा वाली बात पूरी की।

इसी बीच एक तरफ तो महर्षि आश्रम लौटे, जब यह सब नजारा देखा तब अपनी आंखें बन्द कर तप बल से सारी परिस्थिति से अवगत हो गये और दूसरी तरफ जब ये तीनों देव वापस स्वर्ग नहीं लौटे तो माता सरस्वतीजी के साथ-साथ माता लक्ष्मीजी व माता पार्वतीजी चिन्तित हो, तीनों सती अनुसूया के पास पहूंची। उन तीनों ने वहां जब सारी हकीकत देखी तब बिना किसी भी प्रकार के संकोच किये सती से अपने अपने स्वामियों को वापस कर देने का आदरपूर्वक आग्रह किया।

सती अनुसूया व महर्षि अत्रि ने उनका आग्रह स्वीकारते हुये विनम्रतापूर्वक यह आग्रह कर निवेदन कर दिया कि जब इन त्रिदेवों को सती ने स्तनपान कराया है तब इन्हें किसी न किसी रूप में हमारे साथ रहना पडेगा। तत्पश्चात उन त्रिदेवों ने उनके आग्रह को स्वीकारते हुये सती के गर्भ में दुर्वासा, चन्द्रदेव व दत्तात्रेय के रूप में अपने अवतारों को स्थापित कर दिया लेकिन जब सती अनुसूया ने दुर्वासा को जन्म देने के पश्चात चन्द्रदेव को भी जन्म दे दिया लेकिन जब तीसरे शिशु का जन्म न हो पाया और सती को प्रसव पीडा होती रही तब ब्रह्मदेव व शिवजी को सारी बात समझ में आ गयी तब उन लोगों ने फिर अपने-अपने कुछ अंश भेजें जिसके चलते भगवान दत्तात्रेय को गर्भ में ही तीन सिर और छः भुजा में हो गये। इस प्रकार भगवान दत्तात्रेय मार्गशीर्ष की पूर्णिमा को जन्मे। यही कारण है जिसके चलते भगवान दत्तात्रेय ब्रह्मा-विष्णु-महेश के अवतार माने जाते हैं।

भगवान दत्तात्रेयजी की कृपा से गुरु गोरखनाथ जी को आसन, प्राणायाम, योग वगैरह का ज्ञान प्राप्त हुआ। इसी तरह भक्त प्रह्लाद को अनाशक्ति-योग का उपदेश दिया। ऐसा माना जाता है कि इन्होंने परशुरामजी को श्री-विद्या मंत्र प्रदान किया था और शिवपुत्र कार्तिकेय को भी अनेक विद्यायें प्रदान की थीं।

भगवान दत्तात्रेयजी आजन्म ब्रह्मचारी, अवधूत और दिगम्बर रहे थे। इनकी आराधना से बहुत ही जल्दी सफलता प्राप्त हो जाती है।

गोवर्धन दास बिन्नानी
राजा बाबू